Babu Genu Shikshan Sanstha's

Late Kishanrao Ramji Shinde College, Parbhani, Dist. Parbhani (MS)

One Day National Level Inter-Disciplinary Seminar

On

"Problems of Women in India : Challenges and Solutions"

Sponsored by
S.R.T.M. University, Nanded

09th March, 2017

Editor
Dr. Digambar B. Rode

Organized by
Department of Economics (P.G.),
Late Kishanrao Ramji Shinde College,
Parbhani, Dist. Parbhani (M.S.) India

Babu Genu Shikshan Sanstha's

Late Kishanrao Ramji Shinde College,

Parbhani, Dist. Parbhani (MS)

One Day National Level Inter-Disciplinary Seminar

on

Problems of Women in India : Challenges and Solutions

Sponsered by

Swami Ramanand Teerth Marathwada University

09th March, 2017

Editor

Dr. Digambar B. Rode

Organized by
Dept. of Economics (P.G.)
Late Kishanrao Ramji Shinde College
Parbhani, Dist. Parbhani (M.S.) India
Nanded, Maharashtra (India)
Ph. No. 02452-240116/242912
Email-lkrscollege@gmail.com

Late Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth Dist. Parbhani

Problems of Women in India : Challenges and Solutions

- **Editor :** Dr. Digambar B. Rode

- **Publisher :** Late Kishanrao Ramji Shinde College, Parbhani, Dist. Parbhani (MS) India

- **Published by :**
  Jyotichandra Publication
  Latur, Dist. Latur (M.S.)

- **ISBN 978-93-85162-23-7**

- **Printing & Binding :**
  Jyotichandra Offset Printing & Binding,
  Latur, Dist. Latur (M.S.)

- **Typesetting :**
  Vikas Dhamale & Anant Kotiwale

- **Cover Page :**
  Vikas Dhamale

- **Edition :** 09th March,2017

महत्वपूर्ण सूचना :

संबंधीत पुस्तकामध्ये समाविष्ठ असलेले शोधनिबंध हे त्या- त्या संबंधीत लेखकांचे असून यामध्ये व्यक्त असलेले विचार हे त्या-त्या लेखकांचे आहेत. सबंधीत शोधनिबंधामध्ये समाविष्ठ असलेल्या विचाराशी संपादक किंवा संपादक मंडळ सहमत असेलच असे नाही. म्हणून संबंधीत शोधनिबंध व त्यामध्ये समाविष्ठ विचारांना ते लेखक जबाबदार राहतील. **- संपादक**

No	Title for Research Paper	Page No
29	मोहन राकेश का नाटक आषाढ़ का एक दिन में भारतीय नारी **एम. एम. गायके**	87
30	पंचायतीराज में महिलाओंका योगदान **डॉ. वी. आर. कत्तूरवार**	90
31	भारतीय क्रिडा क्षेत्र मे महिलांओ को योगदान **डॉ. गुरूदास आदिनाथ लोकरे**	92
32	मालती जोशी के उपन्यासें मे चित्रित स्त्री जीवन **डॉ. शेषराव लिंबाजी राठोड**	95
33	भारतीय साहित्य और स्त्री **डॉ. संगीता दिलीपराव भिसे**	98
34	दोहरा अभिशाप आत्मकथा में अभिव्यक्त स्त्री-विमर्श **डॉ. सौ. व्ही. व्ही. देशपांडे**	101
35	स्त्री विमर्श के परिप्रेक्ष्य में अनामिका का काव्य **डॉ. संजय जाधव**	104
36	हिंदी नाटकों में व्यक्त नारी समस्या **डॉ. विजया दिगंबरराव गाढवे**	107
37	स्त्री - विमर्श **प्रा. डॉ. अंजली चौधरी**	109
38	महिला सशक्तिककरण एक अध्ययन **डॉ. लेफ्टनंट अनिता शिंदे**	111
39	स्त्रि भुण हत्या **शेख हुमा कौसर**	114
40	स्त्री विमर्श और हिन्दी स्त्री लेखन **आश्विनी सुधाकरराव गायकवाड**	116
41	ग्रामीण महिलाओं के सशक्तीकरणपर स्वयंसिध्दा योजना का प्रभाव **जयश्री पुंडलिकराव सोनकांवळे**	119
42	भारतीय नारी की वर्तमान समस्यांएँ और समाधान **प्रा. डॉ. व्ही. वी. कुलकर्णी**	122
43	नासिरा शर्मा की कहानियों में स्त्री विमर्श **डॉ. संजय गडपायले**	125
44	समकालीन उपन्यासकारों द्वारा चित्रित नारी का यथार्थ **निर्मला ल. जाधव**	128
45	भारतीय स्वातंत्र्य लढ्यातील महिलांचे कार्य **डॉ. एच.टी. सातपुते**	131

भारतीय नारी की वर्तमान समस्यांएँ और समाधान

Late Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth Dist. Parbhani

प्रा. डॉ. व्ही. बी. कुलकर्णी
हिन्दी विभागध्यक्षा,
कै. रमेश वरपुडकर महाविद्यालय,
सोनपेठ, जि. परभणी

42

भारत की नारी जाग रही है। वह घुँघट छोड बाहर निकल रही है । वह छुई मुई होकर नही रहना चाहती । वह आदमी के साथ कदम मिलाकर चलना चाहती है । वह जानती है कि स्त्री-पुरुष जीवन यात्रा में बराबर के सहयोगी है । वह सहचारी होकर जीना चाहती है । भारत में भूमण्डलीकरण का पूरा असर है, नारी के जीवन शैली में बदलाव आ गया है। वह इस प्रतिस्पर्धा के युग में प्रतिस्पर्धी बनकर खडा होना चाहती है तथा अग्रिम पंक्ति में अपनी उपस्थिति दर्ज करना चाहती है । महिलाओं की शिक्षा का दिनोंदिन बढता ग्राफ, साइंस और टेक्नोलॉजी में बढती पकड और समाज के हर क्षेत्र में महिलाओं का काबिज होना वही असल तस्वीर है आज की इस 'आधी दुनिया' की भारत में महिलाओं की मौजूदा तस्वीर तैयार करने के लिए न सिर्फ सरकार की ओर से प्रयास किए गए है, बल्कि स्वयं महिलाओं ने आगे बढकर हर क्षेत्र में अपनी पकड मजबुत करते हुए खुद को एक नई पहचान दी है।

सच यह है की समूची कायनात में अकेली औरत रंग नही भर सकती , स्त्री को पुरुष के बिना नही पुरुष के साथ खडे रहना है । पुरुष कोई मानक या प्रतिमान नही जिससे स्पर्धा की जाए पुरुष की कार्बन कॉपी बनकर औरत आखिर क्या हासिल कर लेगी ? स्त्री को दासता नही समानता एहसास नही अधिकार, दया नही संवेदना वर्णस्व नही सह आस्तित्व चाहिए बस इतना चाहा जाना की पुरुष का वह अहम ध्वस्त हो जो स्त्री को वस्तु समझने के घटीया एहसास को जन्म देता है ।

शिक्षा के बल पर आज नारी चार दिवारों की कैद से स्वतंत्र हो चुकी है । शौषण के तरीके से कुछ राहत पा चुकी है। परंतु उसकी उपेक्षा आज भी जैसी के वैसी ही है । नारी मुक्ती के लिए आर्थिक आत्मनिर्भरता एक प्रारंभिक पहलु है उसके काम के लिए सार्वजनिक क्षेत्रो में निकलने का अधिकार मिलना चाहिए ताकी वह पुरुष की मोहताज न रहे । नारी आज शिक्षीत हुई है । इसी के परीणाम स्परुप उसमें अब अपील स्वतंत्र अस्तित्व और अधिकारों के प्रति जागृती निर्माण हुई है । आज वह अपना भविष्य सुखपुर्ण एवं उज्वल बनाने के लिए खुद प्रयत्नशील है। फिर इस कार्य के लिए वह घर की चार दिवारों को लांघकर बाहर निकल रही है । और बाहर आने के बाद निर्माण होनेवाली समस्याओं का सामना वह खुद कर रही है ।

आज जब इक्कीसवी सदी के ग्लैमरस और सफलतम सोपनो को चढती नारी हर क्षेत्र में अपना पश्चम लहरा रही है। विश्व की आधी जनसंख्या नारीयों की है । नारी मुक्ती आन्दोंलनों के साथ-साथ नारीयों ने अपनी सदियों पुरानी परम्पराओं की बेडियाँ उतारकर फेंक दी है। वर्तमान समय में भारतीय महिलाओं के स्तर के सुधारने

Dist. Parbhani

उनको पुरुषों के साथ समान स्तर पर लाने के लिए अनेक स्वैच्छिक महिला संगठन निर्मित किये गये है । "२१ नवम्बर १९९५ को महिलाओं के बारे में राष्ट्रीय निति का प्रारंभिक प्रारुप जारी किया गया । इसे महिला निति में महिलाओं को सरकारी नौकरीयों में ३० प्रतिशत आरक्षण देने की घोषणा की गई है।" 1 महिलाओं को आर्थिक दृष्टी से आत्मनिर्भर बनाने के लिए उन्हे स्वयंरोजगार के अवसर जुटाने पर विशेष ध्यान दिया गया है।

'मुक्ती ' के लिए स्त्री पुरुष दोनों को नैसर्गिकता के मानी समझने की जरुरत है मुक्ती 'कस्तुरी 'है वह स्त्री के भीतर है बस उसे उपभोक्तावाद के शोर शराबे के बीच दो घडी ठहरकर अन्तरआत्मा की आवाज सुननी होगी । वह प्रयासरत है उसकी पुरकशिश आवाज से टूट रहे है । पुर्वाग्रहों के सन्नाटे अंधेरे शिकस्त खा रहे है । उजालों की आमद में तेजी आ रही है। वक्त अपनी केंचुल उतार रहा है उतरने लगी है उसके ओंठो पर जमी उदासी की परतें हताशा के वो मंजर उसे मंजूर नही जो उसके वजुद के नकार से जुडा है।

सामाजिक पराधिनता , पुरुष अधीनस्थता प्रचलित आदर्श, विश्वासों मान्यताओं व मूल्यों के संबंध से नारी को मुक्त करने का प्रयास ही नारी मुक्ती आन्दोलन है। अनादी काल से नारी जांती का चहुँमुखी शोषण होता रहा है। आज नारी को ऐसे ही शोषण से मुक्त कराने का प्रयास हो रहा है। इसीलिए आज के युग को महिला जागरण का युग कहा जा रहा है। अब नारी के अधिकारों सुरक्षा के लिए अनेक नियम एवं अधिनियम बनाये जा रहे है। नारी मुक्ती आंदोलन आखिर क्या है। कौनसी स्वतंत्रता चाहती है नारियाँ ? खानपान की पहनावे की या अन्य ? तमाम मुद्दो को लेकर नारी मुक्ती से लिए संघर्ष करनेवाली नारियों के भी दो गुट बनगये है। एक तथाकथित आधुनिकता तथा मुक्ती की बात करनेवाली फैशन परस्त नारियाँ, दूसरी वास्तव में विभिन्न स्तरों पर लिए जा रहे नारियों के शोषण के खिलाफ आवाज उठानेवाली नारियाँ । नारी अपने आपको समर्थ और सबल बनाकर ही अपने अधिकार अर्जित कर सकती है। प्रो सुश्री कहती है। " ईश्वर ने स्त्री पुरुष दोनों भिन्न -भिन्न प्राणियों की सष्टि की है और स्पष्टतः दोनों प्रकती भिन्न है। अतः नारी मुक्ती के नाम पर नारी को पुरुष मान लेना असंभव है । " २

जबतक आज की नारी निष्ठापुर्वक अपना कर्तव्य निभाती रहेगी। पुरुष से अधिक प्रशंसा की अपेक्षा नही करेगी, उसकी क्षमता निपुणता पर कोई प्रश्न नही लग सकता , बस आज की नारी को सावधान रहते हुए अपने विवेक और दक्षता का भरपूर उपयोग करना चाहिए । आदर सद्भावना प्रेम, स्नेह सबकुछ एक हाथ पर धरा है। इस संसार में अनेक अनूठी संभावनाएँ है। अपरिमित सीमाएँ अवसर है। संतुष्ट और प्रसन्नचित्त रहकर अगर नारी को दुगनी मेहनत करनी पडी तो आनेवाली सदी में भविष्य का भय स्वयं ही भयभीत होकर दबे पाँव लौट जायेगा । सरोज वशिष्ठ के अनुसार "व्यक्तीत्व तेरी उम्मीद नही सिर्फ अपनी पहचान हुँ मै, किसी का अधिकार नही अपना ही स्वीकार हुँ मै । " 3

नारी अधिकारों और उन सवालों जवाबों की माँग क्षमा शर्मा स्त्री का समय में कहती है - "आखिर आदमियों को यह हक क्यों होना चाहिए कि वे ये बताएँ की औरत किस तरह का आचरण करे ।" 4 नारी का यह मुक्ति संदेश जिसने २१ वी सदी के द्वारपर खडे होकर नारी की स्थिति को गुलाम बना रखा है। ममता कालिया का कहना है - "मुक्ती एक व्यक्ती से नही व्यवस्था से मिलने की बात है ।" 5 १८५७ से संयुक्त राज्य अमेरीका में महिलाओं और पुरुषो के समान वेतन को लेकर हडताल हुई थी । इसी दिन के बाद में अन्तरराष्ट्रीय महिला दिवस के रुप में मनाया गया । इसी के साथ विश्व भर में नारी मुक्ती आंदोलनों की शुरुवात हो चुकी थी। किन्तु अमेरिका को इसका केन्द्र माना जाता है। भारत में इस सम्मेलन की शुरुवात नवजागरन के साथ हुई । "बाल - विवाह, विधवा-विवाह और बहुपत्नी प्रथा के विरुद्ध लडते हुए राजा राममोहनराय स्त्री के पक्षधर

Late Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth Dist. Parbhani

आते है। स्वामी विवेकानंद और स्वामी दयानंद सरस्वती ने भी स्त्री शिक्षा पर जोर दिया । इस प्रकार अमेरीका से शुरु हुआ यह आंदोलन भारत में स्त्री जाती की चेतना का स्वर बन गया । " 6

नारी चाहे किसी भी वर्ग की हो उसका अपना एक संसार होता है। मध्यवर्ग की नारी की तरह निम्नवर्ग की नारी भी घुटन एवं कुंठाओं के घर में घिरी होती है। परंतु दोनो की घुटन में अन्तर है यद्यपी दोनों के संघर्ष का मुख्य कारण आर्थिक परिस्थितीयाँ है। मध्यमवर्गीय या निम्न-मध्यमवर्गीय नारी मुख्यतः शिक्षित नारी से कुछ भिन्न होती है। निम्न मध्यमवर्ग की नारी अपेक्षा संवेदनशील होती है। निम्न मध्यमवर्गीय नारी घुट-घुट कर नही मरती क्योंकी झूटी इज्जत ओढने की समस्या उसके वर्ग में इतनी प्रबल नही है। जितनी की समाज के अन्य वर्गो में है। विशेष कर निम्न मध्यमवर्ग में अपनी विशिष्ट मनःस्थिति के कारण निम्नवर्ग की नारी भरे बाजार में पुरुषों का मुकाबला करने से पिछे नही हटती और यह बात हमारे भारत में आम है। 7

आज की नारी का कार्य क्षेत्र परिवार तक ही सिमीत नही रह गया है। उसे अपने कार्यक्षेत्र में अनेक रुपों में अपना दायित्व निभाना पडता है। इस कारण नारी को एक ही दिन में कई प्रकार की भूमिका निभानी पडती है। आजकाल की कामाकाजी नारी के रुप बहुआयामी हो चुके है। जो नारी शक्तिरुप होना सिद्ध करता है । वह जग जननी है। यह जगत उसी के कारण से है। नारी की तुलना पृथ्वी से करते हुए कहा गया है की उसमें पथ्वी जैसी क्षमा, सुर्य जैसा तेज, समुद्र के समान गम्भीरता, चंद्रमा के समान शितलता एवं पर्वत जैसी उँचाई है।

समस्त चुनौतियों का डर कर सामना करनेवाली औरत कई हृदयहीन दृश्यों से दो चार हो रही है। खाप पंचायते , ऑनर किलिंग , कन्या भ्रृणहत्या, तलाक, बलत्कार, दहेज, क्षतिग्रस्त पुरुष के अहंकार से घिनौने उत्पाद है । महंगाई और ओट बँक की राजनीती शिकंजा कस रही है। दृश्य बेशक मिश्रित है पर हर सांझ अगली सुबह को जन्म भी तो देती है। १९७ देशों में वन बिलियन राइजिंग इस अभियान का नजारा दुनिया ने देखा । अत्याचार अब और नही औरत के पास आवाज भी है । और वोट भी 'सेव उमन सेव नेशन' का नारा उम्मीद से भरा है। पूर्ण स्वाधिनता के साथ अस्मिता के रेखांकन की पहल अब संसद से लेकर सडक तक उतर आई है। यही तो चाहा था हमने !!

संदर्भ संकेत :-

१) भारतीय नारी वर्तमान समस्याएँ और भावी समाधान - रमा शर्मा, एम के मिश्रा - पृ - ०१
२) समाज कल्याण - मासिक पत्रिका - फरवरी १९९७ - पृ . १८
३) हंस पत्रिका मई २००० - राजेंद्र यादव - पृ.क्र.४१
४) हंस पत्रिका - जुलाई -२००० - राजेंद्र यादव - पृ.क्र.९४
५) साठोत्तरी हिन्दी लेखिकाओं की कहानियों में नारी - डॉ. सौ. मंगला कप्पीकेरे - पृ.क्र.८०
६) मुधुमती - मार्च २०११ पृ.क्र. १४
७) चित्रा मुद्गल के कथा साहित्यों में नारी डॉ. राजेंद्र बाविस्कर- पृ.क्र.२१७

PRINCIPAL
Late Ramesh Warpudkar (ACS)
College, Sonpeth Dist. Parbhani